विद्युत मंत्रालय
MINISTRY OF
POWER

गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार
और जिल्द संयुक्त रूप से प्रस्तुत करते हैं

अ.

अक्षरम्

अक्षरों के आँगन में संस्कृति की रंगोली

"'अक्षरम्' की साहित्यिक भव्यता को प्रतिष्ठित सप्ताहिक 'पंचजन्य ' ने किया प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत"

मीडिया पार्टनर

काव्यPedia

बात भारत की पाञ्चजन्य

आयोजन समिति

मां सरस्वती के चित्र पर पुष्प अर्पित करते हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी के कार्यकारी उपाध्यक्ष डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री। साथ में (बाएं से) हरियाणा सरकार में मंत्री रणबीर सिंह गंगवा, प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक श्री जे.नंद कुमार एवं गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई

विचार, संस्कार और राष्ट्र चेतना का संगम

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, हिसार में 3 से 5 अप्रैल तक आयोजित 'अक्षरम-2026' महोत्सव केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि एक वैचारिक और सांस्कृतिक उत्सव था, जिसमें बौद्धिक विमर्श, रचनात्मक अभिव्यक्ति और राष्ट्रीय चेतना–तीनों को एक साथ साधने का प्रयास किया गया। इसकी संकल्पना के मूल में यह प्रश्न था कि आयोजन किसी एक टेम्पलेट से नहीं, बल्कि समाज, परिवार, पीढ़ी और व्यक्ति–सबकी जरूरतों को समझकर रचा जाना चाहिए।

जैसे रसोई में मां हर सदस्य की आवश्यकता, रुचि और स्वास्थ्य का ध्यान रखकर भोजन बनाती है, वैसे ही इस आयोजन की रचना भी पोषण, संवेदना और जिम्मेदारी को साथ लेकर की गई। इसी कारण इसमें केवल कार्यक्रमों का संकलन नहीं, बल्कि एक समग्र पारिस्थितिकी तंत्र बनाने की कोशिश दिखाई देती है।

इस विमर्श में समकालीन प्रश्नों पर भी चर्चा हुई, जैसे आभासी बनाम वास्तविक, जनसांख्यिकी परिवर्तन, अकादमी विचारधारा, पुरस्कार विवाद, मीडिया में सच और झूठ, तथा विश्व युद्ध की ओर बढ़ती दुनिया। लेकिन इसके साथ–साथ ऐतिहासिक और राष्ट्रीय चेतना के विषय भी केंद्र में रखे गए, ताकि विभाजन की पीड़ा, गुरु तेग बहादुर और बाबा साहब आंबेडकर जैसे प्रश्न छूट न जाएं।

'अक्षरम-2026' की विशेष उपलब्धियों में से एक यह भी रही कि इसके बीच से नौ से 11 शोध-पत्र निकले, जो इस बात का प्रमाण हैं कि यह आयोजन केवल मंचीय गतिविधि नहीं, बल्कि गंभीर अकादमिक सृजन का आधार भी बना।

साहित्यिक विधाओं और रचनात्मक अभिव्यक्ति के क्षेत्र में भी यह आयोजन व्यापक रहा। कविता, कहानी-लेखन, यात्रा-लेखन, रिपोर्ताज, पुस्तक-लेखन और प्रकाशन की बारीकियों पर कार्यशालाएं हुईं, वहीं कवि-सम्मेलन और 'ओपन माइक' कार्यक्रम ने इस पूरे वातावरण को जीवंत कर दिया। छात्रों की सक्रिय भागीदारी ने इस आयोजन को और अधिक ऊर्जावान बना दिया।

आधुनिक समय के अनुरूप संचार माध्यमों, कंटेंट-क्रिएटर्स, 'ऑरेंज इकॉनमी', फिल्म-पटकथा लेखन, कथा-कहन, सोशल मीडिया संवाद, फिल्म-स्क्रीनिंग और एआई के दौर में रचनात्मकता की रक्षा जैसे विषयों पर भी गहन कार्यशालाएं हुईं। इससे यह स्पष्ट हुआ कि 'अक्षरम' परंपरा और तकनीक, दोनों के बीच संवाद का मंच बनना चाहता है।

इस आयोजन में जलवायु परिवर्तन, जेन-जी संवाद, क्षेत्रीय और लोक संस्कृति, भजन-बैंड प्रस्तुति अकादमिक और संस्थागत सहभागिता ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साथ ही धार्मिक अध्ययन केंद्र में यज्ञशाला का उद्घाटन, जंबेश्वर महाराज की परंपरा, विश्नोई समाज की 29 प्रतिज्ञा में से एक 'नील का उपयोग त्यागे' जैसे प्रतीकात्मक संकेतों ने इस आयोजन को सांस्कृतिक गहराई दी।

अंततः 'अक्षरम-2026' ने यह संदेश दिया कि विश्वविद्यालय केवल ज्ञान का केंद्र नहीं, बल्कि जिज्ञासा, संवाद, श्रद्धा और तर्क का साझा परिसर है। यह आयोजन एक बीज की तरह बोया गया है, जिसका फल, छाया और विस्तार समय के साथ सामने आएगा, और यही उसकी स्थायी उपलब्धि होगी। ■

'जनसांख्यिकी बदलने से भविष्य भी बदल जाता है'

जनसांख्यिकी परिवर्तन केवल आंकड़ों का विषय नहीं, बल्कि समाज, संस्कृति और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा एक गंभीर विमर्श बनता जा रहा है। कार्यक्रम में इस विषय पर सामाजिक कार्यकर्ता **सतीश गोकुल पांडा** ने अपने विचार रखे

जनसांख्यिकी परिवर्तन से भारत ही नहीं, पूरा विश्व जूझ रहा है। इन दिनों जब भारत में जनगणना आरंभ होने वाली है, तब देश के सामने कई चुनौतियां आन पड़ी हैं। इनमें कहीं अलग श्रेणी की मांग है, तो कहीं धर्म और जाति समीकरण में बड़े बदलाव की चेतावनी है। बाहर का कोई व्यक्ति अपने घर आता है, तो वह निश्चित रूप से चुनौती है; लेकिन यदि हमारे घर के लोगों को ही कोई हमारे विरोध में खड़ा कर दे, वह और भी बड़ी समस्या है। उन पर आप तलवार भी नहीं चला सकते, यह बहुत बड़ी चुनौती है। न सिर्फ बांग्लादेशी घुसपैठिए, बल्कि यह उससे भी बड़ी चुनौती है। आज के दौर में यदि यह कहा जाए कि 'डेमोग्राफी इज डेस्टिनी' यानी देश का भविष्य जनसंख्या के माध्यम से निर्धारित होता है, तो यह शत-प्रतिशत सही जान पड़ता है। क्योंकि जिस देश की जनसांख्यिकी बदलती है, उसका भविष्य भी बदलता है। जनसंख्या ही किसी भी देश का भविष्य तय करती है। यदि जनसांख्यिकी में कोई बदलाव हो रहा है, तो वहां के बुद्धिजीवी समाज को निश्चित रूप से सजग होना चाहिए और उन्हें इस बारे में चिंतन करना चाहिए।

जनगणना की शुरुआत

अंग्रेज जब शुरू-शुरू में भारत आए, तो वे हिंदू समाज की विविधता को देखकर हैरान थे। क्योंकि उनके लिए एक देवता, एक पुस्तक और एक धर्म ही सबकुछ था। यहां कुछ लोग विष्णु, शिव, देवी या पेड़-पौधे की पूजा करते हैं, कुछ किसी की पूजा नहीं करते हैं, फिर भी वे हिंदू हैं। हिंदू को परिभाषित करने के लिए, कि हिंदू कौन नहीं है, अंग्रेजी शासन की ओर से पहली बार 1871 में जनगणना की गई थी, लेकिन औपचारिक जनगणना 1881 की मानी जाती है। इस जनगणना में अंग्रेजों ने सिखों को अलग धर्म के रूप में अनुसूचित किया। उसके लिए अलग कॉलम बनाई गई और उस समय छह प्रतिशत सिख भारत में थे। धीरे-धीरे अंग्रेजों ने वर्गों की परिभाषा थोपी और भारतीयों ने उसे स्वीकार कर लिया। उन्होंने वनवासियों को हिंदू समाज से अलग कर दिया, और उन्हें आदिवासी की संज्ञा दी गई। साथ रहने वाले लोगों को अलग-अलग नाम देकर समाज को बांटना शुरू कर दिया। 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ, लेकिन इसके बाद भी धार्मिक जनगणना जारी रही। जनजाति समाज का कन्वर्जन होता रहा। हमारी जनगणना प्रणाली में धर्म और मत पंथ के छह भाग हैं, अन्य धार्मिक आस्था इस श्रेणी में नहीं आते हैं। यहूदी और पारसी समुदाय को एक अलग कोड दिया गया है।

परिवर्तन के प्रमुख कारण

भारत में जनसांख्यिकी परिवर्तन के तीन प्रमुख कारण हैं, घुसपैठ, कन्वर्जन और कुल प्रजनन दर; ये तीनों महत्वपूर्ण हैं। इनकी पर्याप्त चर्चा होनी चाहिए। अगर आपके घर में कोई बाहरी व्यक्ति आ जाता है, वह आपके लिए निश्चित रूप से एक चुनौती होता है। इसके अलावा, अगर वह आपके घर के लोगों को

कार्यक्रम में लगी प्रदर्शनी का अवलोकन करते गायक अनु मलिक और आयोजन समिति के सदस्य।

स्वदेशी हाट की एक झलक

ऐसे सांस्कृतिक और साहित्यिक कार्यक्रम युवाओं को अपनी जड़ों से जोड़ने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं। यह न केवल उन्हें अपनी परंपराओं के प्रति जागरूक बनाते हैं, बल्कि उनमें राष्ट्र के प्रति जिम्मेदारी की भावना भी विकसित करते हैं। समाज निर्माण में इस तरह के प्रयासों की विशेष भूमिका होती है।

— प्रदीप जोशी

अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख, रा.स्व.संघ

भारतीय साहित्य भले ही अनेक भाषाओं में लिखा गया हो, लेकिन उसकी आत्मा एक ही है। यह विविधता में एकता का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करता है, जहां अलग-अलग भाषाएं एक ही सांस्कृतिक चेतना को अभिव्यक्त करती हैं। साहित्य का उद्देश्य समाज को जोड़ना और उसकी मूल संवेदनाओं को जीवित रखना है।

— जे नंद कुमार, राष्ट्रीय संयोजक, प्रज्ञा प्रवाह

आपके विरुद्ध खड़ा कर दे, वह और भी बड़ी चुनौती होती है। इसलिए 'अन्य धार्मिक आस्था' का मुद्दा बहुत गंभीर है।

भारत में 'अन्य धार्मिक आस्था' विषय के जनक अंग्रेज हैं। अंग्रेजों को यह स्पष्ट था कि भारतीय समाज बहुत मजबूत है, यह एक-दूसरे से जुड़ा हुआ है, गूंथा हुआ है। उनको बांटने के लिए उन्हें तोड़ना जरूरी था, क्योंकि यहां समाज को बांटे बिना वे लंबे समय तक अपना शासन नहीं कर सकते थे। इसलिए उन्होंने 'डिवाइड एंड रूल,' अथवा 'फूट डालो और शासन करो' की नीति अपनाई। उन्होंने भारतीय समाज के अलग-अलग समूह, वर्ग और जाति को अलग-अलग पहचान देना शुरू कर दिया। उनको अलग करके परिभाषाएं दे दीं और कहा, 'ये अलग हैं।' उन्होंने एक योजना के अंतर्गत 'धार्मिक जनगणना' का षड्यंत्र भी रचा था। इसी का परिणाम है कि आज 'ORP' (Other Religion Persuasion) यानी 'अन्य धार्मिक आस्था' के बहाने जनसांख्यिकी परिवर्तन करने वाला एक पूरा तंत्र देश में सक्रिय है।

1951 में स्वतंत्रता के बाद भारत की पहली जनगणना हुई। तब से लेकर 2011 की जनगणना को देखें, तो मुसलमानों की जनसंख्या में 45 प्रतिशत वृद्धि हुई है और 'अन्य धार्मिक आस्था' वालों की संख्या में 53 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह जैविक वृद्धि हो ही नहीं सकती-यह बाहरी ताकतें ही कर सकती हैं। चिंता का विषय है कि वे ऐसे लोगों की जनसंख्या को बढ़ाने में क्यों लगी हैं? उनका उद्देश्य स्पष्ट है, ऐसे लोगों को अलग-अलग पहचान देना, उन पहचानों को बढ़ाना और फिर उनको आपस में लड़वाना। अंग्रेजों के जाने के बाद भी ऐसी वामपंथी सोच ने देश को तोड़ने की भरसक कोशिशें की हैं।

इन ईसाई मिशनरियों की भूमिका लोगों को ईसाई बनाने की होती है, बस आप ईसाई बन जाइए, कन्वर्जन कर लीजिए। क्योंकि किसी के लिए अपनी जड़ों से कटना आसान नहीं होता। व्यक्ति के लिए तुरंत निर्णय करना आसान नहीं होता, लेकिन ऐसे में लोगों को भड़काना आसान हो जाता है। ईसाई मिशनरियों ने यही तरीका अपनाया। उन्होंने अपने काम को पूरा करने के लिए दो चरणों का सिद्धांत बनाया है।

कन्वर्जन की प्रक्रिया

पहले चरण में व्यक्ति को सर्वप्रथम उसके मूल से तोड़ा जाता है। उसकी छोटी पहचान के प्रति सजग किया जाता है। वे लोगों को यह कहकर भड़काते हैं, जैसे, तुम आदिवासी हो, तुम हिंदू नहीं हो; हिंदुओं

'डेमोग्राफिक चेंज और देश की सुरक्षा' सत्र के वक्ता (बाएं से) डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री, श्री कुलदीप रत्नू, श्री बिनय कुमार सिंह एवं श्री सतीश गोकुल पांडा

'भारत विभाजन – पीड़ा और पाठ' सत्र के वक्ता (बाएं से) श्री राजीव तुली, श्री कृष्णानंद सागर एवं डॉ. कुलदीप चंद अग्निहोत्री

'बाबासाहब का दृष्टिकोण आज भी समावेशी'

"बाबा साहब डॉ. आंबेडकर एवं उनकी दूरदृष्टि" सत्र में दिल्ली, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के 9 विशेषज्ञ अध्यापकों द्वारा डॉ. आंबेडकर पर शोधपत्र प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. राजकुमार फुलवरिया द्वारा की गई। प्रथम शोधपत्र डॉ. देवराज सिंह द्वारा "भारत के संविधान के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन" विषय पर प्रस्तुत किया गया, जिसमें उन्होंने संविधान की विभिन्न धाराओं के माध्यम से सामाजिक जीवन में उन्नति कैसे हुई, इस पर विस्तार से चर्चा की

- डॉ. राहुल चिकमुरकर ने डॉ. आंबेडकर के आर्थिक दर्शन की अत्यंत सुंदर व्याख्या की। उन्होंने अपने व्याख्यान में यह स्पष्ट किया कि डॉ. आंबेडकर की आर्थिक सोच आज भी प्रासंगिक है और समावेशी एवं न्यायपूर्ण भारत के निर्माण के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होती है।
- डॉ. अजय कुमार ने "लोकतांत्रिक समावेशन: डॉ. आंबेडकर के राष्ट्र-निर्माण का सपना" विषय पर अपने विचार रखे। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि डॉ. आंबेडकर का लोकतांत्रिक समावेशन का दृष्टिकोण आज भी समावेशी, सशक्त और विकसित भारत के निर्माण के लिए अत्यंत प्रासंगिक है।
- डॉ. राकेश पुनिया ने "हमारा संविधान एवं बाबा साहेब डॉ. आंबेडकर की प्रेरणा" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने संविधान के निर्माण के बारे में अत्यंत सुंदर जानकारी दी। उन्होंने बताया कि भारत के स्वतंत्र होने के बाद एक ऐसे संविधान की आवश्यकता थी, जो देश की विविधताओं को एकता में बांध सके। डॉ. आंबेडकर ने प्रारूप समिति के अध्यक्ष के रूप में एक आधुनिक, लोकतांत्रिक और समावेशी संविधान का निर्माण किया, जिसमें समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के मूल्यों को प्रमुख स्थान दिया गया।
- डॉ. प्रिया गहलोत ने "सामाजिक न्याय एवं डॉ. आंबेडकर" विषय पर अपना शोधपत्र प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने कहा कि डॉ. आंबेडकर ने महिलाओं को समाज में समान अधिकार दिलाने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा, संपत्ति के अधिकार, विवाह और तलाक में समानता तथा कार्यस्थल पर सम्मान और सुरक्षा के पक्ष में आवाज उठाई। हिंदू कोड बिल के माध्यम से महिलाओं को कानूनी अधिकार दिलाने की दिशा में डॉ. आंबेडकर का प्रयास ऐतिहासिक रहा।
- डॉ. सुभाष कुमार ने अपने शोधपत्र के माध्यम से यह स्पष्ट किया कि डॉ. आंबेडकर ने राज्य की सक्रिय भूमिका, भूमि सुधार, औद्योगीकरण तथा श्रमिकों के अधिकारों पर विशेष बल दिया। उनका मानना था कि जब तक आर्थिक संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण नहीं होगा, तब तक वास्तविक लोकतंत्र स्थापित नहीं हो सकता।
- डॉ. सन्नी ने डॉ. आंबेडकर को पत्रकार, लेखक, संपादक एवं कलम के सिपाही के रूप में प्रस्तुत किया तथा उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों एवं संपादन कार्यों के बारे में विस्तारपूर्वक बताया।
- सत्र के संयोजक डॉ. रजनीकान्त ने "डॉ. आंबेडकर एवं समरसता" विषय पर सामाजिक समरसता के दृष्टिकोण को संक्षेप में प्रस्तुत किया। उनके अनुसार, समरसता तभी संभव है जब समाज में प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर और अधिकार मिलें तथा किसी प्रकार का भेदभाव न हो।
- सत्र के अध्यक्ष डॉ. राजकुमार फुलवरिया ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डॉ. आंबेडकर के राष्ट्रवाद को समावेशी और लोकतांत्रिक स्वरूप में देखा, जिसमें सभी वर्गों को समान अधिकार और अवसर प्राप्त हों। उन्होंने कहा कि डॉ. आंबेडकर ने संविधान के माध्यम से एक ऐसे राष्ट्र की नींव रखी, जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के सिद्धांतों पर आधारित है।

ने तुम पर अत्याचार किया है; तुमको जंगल में खदेड़ दिया है; उन्होंने तुम्हें पिछड़ा बनाया। इस तरह उनकी 'आदिवासी' पहचान मजबूत की जाती है और फिर वह एक बड़े समूह से कट जाता है, जड़ से भी कट जाता है। जिस मानसिक अवस्था में वह पहुंचता है, वहां दूसरे चरण यानी उसे ईसाई बनाने का काम आसान हो जाता है।

मेघालय में 1991 में 'अन्य धार्मिक आस्था' में विश्वास करने वालों की संख्या 58 प्रतिशत थी, जिनमें से 23 प्रतिशत ईसाई बन गए। नागालैंड में 1951 में 98 प्रतिशत नागा समुदाय के लोग थे, वे एक झटके में हिंदू धर्म से कट गए। झारखंड में 2011 की जनगणना में 32 तहसीलें ऐसी हैं, जहां पर खुद को 'अन्य धार्मिक आस्था' बताने वाले यानी "मैं हिंदू नहीं हूं" कहने वाले 50 प्रतिशत से अधिक हैं। 66 तहसीलें हैं, जहां हर चौथे व्यक्ति ने निशान लगाया कि "मैं हिंदू नहीं हूं"; 11 तहसीलों में 80 प्रतिशत और 2 तहसीलों में 90 प्रतिशत लोगों ने 'अन्य धार्मिक आस्था' वाले कॉलम में निशान लगाया है। इनमें अधिकतर मुसलमान या ईसाई हैं। मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ भी इसी ओर उन्मुख हैं। जनसांख्यिकी परिवर्तन आंतरिक सुरक्षा के लिए

बात भारत की **पाञ्चजन्य** साप्ताहिक

भारत प्रकाशन (दिल्ली) लिमिटेड

VOICE OF THE NATION **ORGANISER**

संपादकीय कार्यालय

टावर 1, छठी मंजिल, 10196, केशव कुंज, देशबंधु गुप्ता रोड, झंडेवालान, नई दिल्ली – 110055

क्रमांक: ....

सब्सक्रिप्शन ऑफर एवं फार्म

मूल्य ₹50

आनलाइन फार्म भरने के लिए स्कैन करें

~~₹2550~~
43% छूट
साथ में 4 विशेष अंक
₹1450

ग्राहक प्रात
कृपया प्रति सुरक्षित करें

मूल्य ₹50

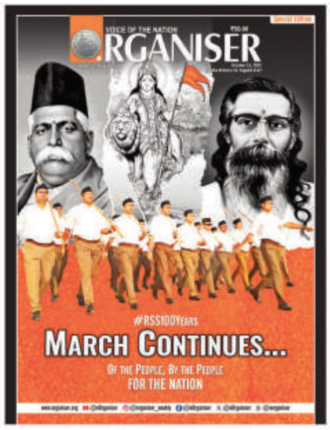

पाञ्चजन्य	मैगज़ीन पोस्ट एक वर्ष (52 अंक*)	☐	₹ 1450
आर्गेनाइजर	मैगज़ीन पोस्ट एक वर्ष (52 अंक*)	☐	₹ 1450
पाञ्चजन्य+आर्गेनाइजर	मैगज़ीन पोस्ट एक वर्ष (52 अंक*)	☐	₹ 2700

(* साथ में 4 विशेष अंक)

ग्राहक विवरण

पहला नाम | मध्य नाम | अंतिम नाम

मोबाइल नं. ______ ई-मेल ______

पत्रिका प्राप्त करने का पता ______

पिन कोड ______ शहर ______ राज्य ______

भुगतान : A/C Name : BHARAT PRAKASHAN DELHI LIMITED A/C No. : ICICI 135405003797 IFSC : ICIC0001354

चेक नं./ आनलाइन भुगतान Ref ID ______ तारीख : ______ ₹..........................

हस्ताक्षर ______

ग्राहक भुगतान प्राप्ति (कार्यालय प्रति)

पहला नाम | मध्य नाम | अंतिम नाम

मोबाइल नं. ______ ई-मेल ______

पत्रिका प्राप्त करने का पता ______

पिन कोड ______ शहर ______ राज्य ______

भुगतान : A/C Name : BHARAT PRAKASHAN DELHI LIMITED A/C No. : ICICI 135405003797 IFSC : ICIC0001354

चेक नं./ आनलाइन भुगतान Ref ID ______ तारीख : ______ ₹..........................

कार्यालय प्रतिनिधि का नाम.. हस्ताक्षर ______

Subscribe Online: www.panchjanya.com and www.organiser.org or Call **8143232814** or e-mail: **support@bpdl.in**

‘जीवन में बड़ा लक्ष्य निर्धारित करें युवा’

‘स्व’ का बोध, सही समय पर सही निर्णय और राष्ट्र को परम वैभव की ओर ले जाने का संकल्प, ये केवल विचार नहीं, बल्कि एक व्यापक राष्ट्रीय दृष्टि है। **रा.स्व. संघ** के **अखिल भारतीय सह प्रचार प्रमुख प्रदीप जोशी** ने इस विषय पर अपने विचार रखे

जब कोई समाज अपने मूल से जुड़कर समग्रता के साथ आगे बढ़ता है, तभी वह सच्चे अर्थों में सर्वश्रेष्ठ बन सकता है। हमारे देश को स्वतंत्र हुए लगभग आठ दशक हो चुके हैं। स्वतंत्रता के समय भारत के सामने अनेक चुनौतियां थीं-विभाजन की पीड़ा, आर्थिक कमजोरी और अस्थिरता। उसी समय दुनिया में जापान भी एक बड़े संकट से गुजर रहा था। द्वितीय विश्व युद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी पर अणु बम गिरने से वहां भारी विनाश हुआ, लेकिन जापान ने शीघ्र ही अपने आपको संभाल लिया और आज वह विश्व के अग्रणी देशों में गिना जाता है। इसी प्रकार जर्मनी का उदाहरण भी हमारे सामने है। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उसे पूर्वी और पश्चिमी जर्मनी में विभाजित कर दिया गया था और दोनों के बीच एक दीवार खड़ी कर दी गई थी। 1989 में उस दीवार को तोड़कर जर्मनी का पुनः एकीकरण हुआ और वह कम समय में ही एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरा। इजराइल का उदाहरण भी प्रेरणादायक है, जिसे 1949 में भूमि मिली और उसने अपनी राष्ट्रीय भावना के बल पर स्वयं को सशक्त राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। इन उदाहरणों से यह प्रश्न उठता है कि कौन-सी शक्ति है, जो इन देशों को संकट से उबारकर आगे बढ़ने की क्षमता देती है। इसका उत्तर है, अपने मूल से जुड़ाव और राष्ट्रीय एकता का भाव।

चुनौतियां और वैश्विक धारणा

स्वतंत्रता के समय भारत के बारे में दुनिया में अनेक नकारात्मक धारणाएं थीं। यह कहा गया था कि भारत एकजुट नहीं रह पाएगा और इसके टुकड़े हो जाएंगे। यहां तक कि यह भी कहा गया कि भारत अपने लिए पर्याप्त अन्न उत्पादन नहीं कर सकेगा। लेकिन भारत ने इन सभी आशंकाओं को गलत साबित किया। पिछले 80 वर्षों में भारत ने अपनी एकता को बनाए रखा और हर क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास किया।

इस लंबे कालखंड में भारत ने अनेक कठिनाइयों का सामना किया है। चार युद्ध लड़े, विभाजन की त्रासदी झेली और आज भी सीमाओं की असुरक्षा एक चुनौती बनी हुई है। यह भी उल्लेखनीय है कि देश की सीमाओं की जटिलता और असुरक्षा की स्थिति का एक कारण औपनिवेशिक विरासत रही है।

इसके बावजूद भारत ने निरंतर प्रगति की है और आज उसका एक नया स्वरूप सामने आ रहा है, जिसे देखकर विश्व आश्चर्यचकित है। यह परिवर्तन केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक शक्ति और चेतना का परिणाम है।

युवा निर्धारित करें लक्ष्य

भारत की सुदीर्घ यात्रा कुछ विशेषताओं के साथ आगे बढ़ी है, जिनमें ‘भारत का विचार’ प्रमुख है। यह विचार अध्यात्म पर आधारित है और शाश्वत है। भारत का परिचय उसके सांस्कृतिक स्वरूप से होता है, जो उसके आचरण, परंपराओं और जीवन शैली में दिखाई देता है। भारत का लक्ष्य ‘विश्व मंगल’ और ‘वैश्विक कल्याण’ का है। आज के

खतरा है। यदि गौर से देखा जाए और निरीक्षण किया जाए, तो यह स्पष्ट होता है कि ‘अन्य धार्मिक आस्था’ का प्रभाव उन क्षेत्रों में सघन है, जिन्हें पहले नक्सल प्रभावित क्षेत्र माना जाता था। इसके अलावा, ‘सिलीगुड़ी गलियारा’-जो पूर्वोत्तर को शेष भारत से जोड़ता है-एक अत्यंत संवेदनशील इलाका है। इस क्षेत्र में ‘अन्य धार्मिक आस्था’ में 5500 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। योजना बनाकर जिले, क्षेत्र और प्रांत को चुनना और वहां ‘अन्य धार्मिक आस्था’ के माध्यम से जनसांख्यिकी परिवर्तन कराना बेहद चौंकाने वाला है। ईसाई मिशनरियों ने ‘अन्य धार्मिक आस्था’ का एक ऐसा भ्रम खड़ा गया है, जिसके तहत वनवासी समाज को यह कहकर समाज से अलग किया जा रहा है कि आप लोग हिंदू नहीं हैं। अंग्रेजों ने पहले ही आपको अलग धर्म कोड दिया है और भारत की सरकार आपको हिंदू बनाना चाहती है। इसके चलते ही झारखंड में अलग धर्म कोड की मांग उठने लगी है। संभव है कि निकट भविष्य में इस तरह के कई जनजाति समाज अपनी-अपनी अलग कोड की मांग करने लगें। छत्तीसगढ़ में गोंड समाज को भड़काने का प्रयास किया जा रहा है।जनगणना की चर्चा जब

कार्यक्रम में उपस्थित विद्वतजन

समय में युवाओं के सामने सबसे बड़ी जिम्मेदारी है कि वे इस मूल विचार को समझें और अपने जीवन में उतारें। किसी भी राष्ट्र की शक्ति का आकलन उसकी सैन्य, आर्थिक, तकनीकी और सामाजिक शक्ति से किया जाता है। इसलिए युवाओं को इन चारों क्षेत्रों में से किसी एक क्षेत्र में योगदान देने का संकल्प लेना चाहिए। यह राष्ट्र निर्माण के लिए बेहद जरूरी है, इसलिए यह आवश्यक है कि युवा केवल नौकरी तक सीमित न रहें, बल्कि जीवन में एक बड़ा लक्ष्य निर्धारित करें। उन्हें यह तय करना होगा कि वे राष्ट्र निर्माण में किस प्रकार योगदान देंगे। 'स्व' का बोध इसी दिशा में पहला कदम है, जो व्यक्ति को अपने कर्तव्य और उद्देश्य के प्रति जागरूक बनाता है।

सही निर्णय लेना जरूरी

'सही समय पर सही निर्णय लेना' अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके लिए दृढ़ इच्छाशक्ति और स्पष्ट दृष्टि की आवश्यकता होती है। एक उदाहरण उस उद्योगपति का है, जो विदेश में सफल जीवन जीने के बावजूद अपने मूल से जुड़ने के लिए भारत लौट आए। उन्होंने अपने गांव में रहकर शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में कार्य प्रारंभ किए। यह 'स्व' के बोध और सही निर्णय का उत्कृष्ट उदाहरण है।

इसी प्रकार बैडमिंटन खिलाड़ी पी.वी सिंधु की प्रेरक कहानी भी सामने आती है, जिसने अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अनुशासन और एकाग्रता को अपनाया। अपने गुरु के कहने पर उसने लंबे समय तक मोबाइल का उपयोग छोड़ दिया, जिससे उनकी एकाग्रता बढ़ी और वह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सफलता प्राप्त कर सकीं। यह दर्शाता है कि छोटे-छोटे त्याग बड़े परिणाम ला सकते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम 'सही समय पर सही निर्णय' लेने का दृढ़ प्रयास करें और अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहें।

भारत को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए समग्रता के साथ सर्वश्रेष्ठता आवश्यक है। यह समावेशी हो, अपने मूल से जुड़ा हो, पर्यावरण के अनुकूल हो और सह-अस्तित्व की भावना पर आधारित हो-तभी सच्चे अर्थों में विकास संभव है। हिंदी में एक कहावत है-'कुछ पाने के लिए कुछ खोना पड़ता है', लेकिन इसे इस रूप में समझना अधिक उचित होगा कि 'कुछ पाने के लिए कुछ बोना पड़ता है'। जब हम अच्छे विचारों और कार्यों के बीज बोते हैं, तभी भविष्य में उनका फल प्राप्त होता है।

इसी संदर्भ में 'अक्षरम्' का यह आयोजन एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सामने आता है। यह केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच है जो विमर्श को जन्म देता है, वैचारिक वातावरण का निर्माण करता है और नए विषयों तथा दृष्टिकोणों को समाज के सामने प्रस्तुत करता है। यह आयोजन एक बीज की तरह है, जो भविष्य में एक सशक्त वैचारिक वृक्ष के रूप में विकसित हो सकता है। इसलिए आवश्यक है कि हम ऐसे प्रयासों से जुड़ें, उनका समर्थन करें और स्वयं भी इस वैचारिक बीजारोपण का हिस्सा बनें। ■

से शुरू हुई है, तभी से कुछ राज्यों में विशेषकर जनजाति बहुल 9 राज्यों में खुद को 'अन्य धार्मिक आस्था' वाला बताने का अभियान शुरू हो गया है। उल्लेखनीय है कि 2011 की जनगणना के समय 80 लाख लोगों ने ओआरपी पर निशान लगाकर यह घोषित किया कि वे हिंदू नहीं हैं। जनसांख्यिकी परिवर्तन का खेल खेलने वालों ने इसे अपना हथियार बना लिया है। समाज में सामाजिक अस्थिरता और वैमनस्य पैदा करने के लिए इसका बखूबी प्रयोग किया जा रहा है। 2011 जनगणना के अनुसार मध्यप्रदेश में 2001 से 2011 के बीच खुद को 'अन्य धार्मिक आस्था' में विश्वास रखने वाला बताने वालों की वृद्धि 1223 प्रतिशत है, और छत्तीसगढ़ में 2747 प्रतिशत। यह जैविक वृद्धि हो ही नहीं सकती। झारखंड में 2011 की जनगणना में 32 तहसीलें ऐसी हैं, जहां पर 'अन्य धार्मिक आस्था' में विश्वास रखने वाला कहने वालों की संख्या 50 प्रतिशत से अधिक है। 66 तहसीलें हैं, जहां हर चौथे व्यक्ति ने 'अन्य धार्मिक आस्था' वाले कॉलम में निशान लगाया कि "मैं हिंदू नहीं हूं"; 11 तहसीलों में 80 प्रतिशत और 2 तहसीलों में 90 प्रतिशत लोगों ने 'अन्य धार्मिक आस्था' वाले कॉलम में निशान लगाया। ■

'साहित्य का मूल तत्व राष्ट्र की एकता'

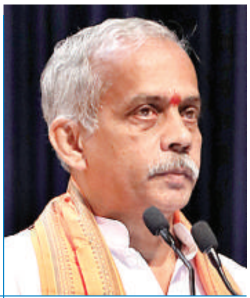

भारतीय साहित्य की मूल आत्मा उसकी एकता, सांस्कृतिक गहराई और ज्ञान परंपरा में निहित है, जो विविध भाषाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है, कार्यक्रम में **प्रज्ञा प्रवाह** के **राष्ट्रीय संयोजक जे. नंदकुमार** ने इस विषय पर अपने विचार रखे

भारतीय साहित्य एक है। इसकी अनेक लेखक, कवि, कहानीकार अनेक भाषाओं में रचना करते हैं, लेकिन इसकी आत्मा एक है। हमारे देश में अनेक भाषाएं हैं, लेकिन उनके साहित्य का तत्व एक है। साहित्य अकादमी का बोध वाक्य है, 'भारतीय साहित्य की एकता।' इस लिए साहित्य का उद्देश्य भी विभिन्न भारतीय भाषा में लिखे साहित्य के बीच आदान-प्रदान हो और सांस्कृतिक एकता को बढ़ावा देना है। अलग-अलग भाषा में लिखे हुए सभी साहित्य का 'देश की एकता' एक मूल तत्व है। उदाहरण स्वरूप वाल्मीकि जी ने 'रामायण' लिखा था। उसके मूल तत्व को लेकर अनुवाद कई भाषाओं में हुआ। लेकिन यह महत्वपूर्ण है कि सुदूर दक्षिण में तमिलनाडु में तमिल भाषा में इसका पहला अनुवाद हुआ था। समय-समय पर अन्य भाषाओं में भी रामायण का अनुवाद विभिन्न लेखकों ने किया। शिक्षाविद् और पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन के अनुसार भारतीय साहित्य विविध भाषाओं में रचे जाते हैं, लेकिन वह सब एक हैं।

ऐसे ही, व्युत्पत्ति शास्त्र के अनुसार देखा जाए तो साहित्य का अर्थ है-सहित होने का या साथ में रहने का भाव। सकारात्मक साहित्य के शब्द और अर्थ में मधुरता होती है। उसमें शब्दों और वाक्यों का परस्पर सुंदर मिलन होता है, जिससे एक सार्थक अर्थ निकलता है। ऐसा साहित्य लोगों में एकीकृत, सम्मान, आदर का भाव जगाता है। इसलिए कहा जाता है कि शब्द और सही अर्थ के मिलन से ही साहित्य बनता है। इससे साहित्य में अपनापन उत्पन्न होता है।

आज जिस कालखंड में हम लोग रह रहे हैं, 'शब्द' के अर्थ को निरर्थक या खत्म करने का प्रयास निरंतर किया जा रहा है। 'शब्द' के अर्थ को अलग-अलग तरीके से उपयोग कर उसके सात्विक भाव को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। उदाहरण के लिए भारत एक राष्ट्र है। हमारी एक राष्ट्रीयता है। पिछले 40-50 साल पहले तक भारत की राष्ट्रीयता क्या है? इस बारे में सही अर्थ में लोगों को बताया ही नहीं गया। इससे एक रिक्तता आई।

नाइजीरिया के प्रसिद्ध लेखक बेन ओकरी को बुकर पुरस्कार उनके उपन्यास 'द फैमिश्ड रोड' के लिए दिया गया था। वह एक साहित्य उत्सव में भारत आए थे। उनसे किसी ने पूछा कि 'भारत और नाइजीरिया' के बुनियादी अनुभव बहुत समान हैं। दोनों ही देशों में औपनिवेशिक शासन रहा है। दोनों देश ने स्वतंत्रता के लिए लंबे समय तक संघर्ष किया है, उनमें कई स्तर में समानता देखने को मिलती है, फिर भी दोनों देशों की स्थिति में क्यों बहुत अंतर है? इसके उत्तर में बेन ओकरी ने कहा, "देश की एकता को नष्ट करने के लिए 'झूठ का विष' ही काफी है। यह 'विष' लोग शब्द के माध्यम से कहानी, इतिहास को गलत ढंग से प्रस्तुत करके लोगों के मानस में भरते हैं। किसी देश को नष्ट करना है, तो उसके साहित्य और इतिहास को गलत तरीके से प्रस्तुत करना ही पर्याप्त है।"

विश्व की ओर दुनिया–'उलझन सुलझे ना' सत्र के वक्ताओं का सम्मान करते श्री प्रदीप जोशी और श्री हितेश शंकर

कहानी कार्यशाला–'कहानी अभी बाकी है' सत्र के वक्ता

मुझे लगता कि किसी राष्ट्र की आत्मा को खत्म करना है तो उसके साहित्य की यथार्थ परिकल्पना को नष्ट कर दो, वह राष्ट्र स्वयं समाप्त हो जाएगा। अतः अपने राष्ट्र को सुरक्षित रखने के लिए सही साहित्य की चर्चा और विश्लेषण की बहुत जरूरत है। इसलिए 'अक्षरम' जैसे साहित्यिक एवं सांस्कृतिक आयोजन की पहल की बहुत जरूरत है।

संस्कृत और ज्ञान परंपरा

नई शिक्षा नीति-2020 हमारे समक्ष आई, इसमें भारत में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं को महत्व दिया गया है। भारतीय संस्कृत के महान संत आदि शंकराचार्य ने संस्कृत में संवाद किया था। 'भारतीय भाषा नीति' पर संविधान सभा में परिचर्चा के दौरान बाबा भीमराव अंबेडकर, डॉ. राजेंद्र प्रसाद, सी. राजगोपालाचारी, मदन मोहन मालवीय जैसे महानुभावों ने चर्चा के दौरान कहा था कि भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने से ही भारत शक्तिशाली बनेगा। उनका कहना था कि भाषा नीति तय करना आवश्यक है। अपनी शिक्षा पद्धति में 'संस्कृत' को महत्व दिया जाना चाहिए। संस्कृत के बिना भारत के साहित्य को समझ नहीं सकते हैं। संस्कृत के बिना भारतीय संस्कृति की परिकल्पना असंभव है। कहने वालों ने तो दशकों पहले ही कह दिया था कि 'संस्कृत मृत भाषा है।' विज्ञान, तकनीकी और विमान शास्त्र के बारे में 'प्रफुल्लचंद्र रे' की प्रसिद्ध पुस्तक 'ए हिस्ट्री ऑफ हिंदू केमिस्ट्री' को पढ़ना चाहिए। वह कोलकाता में रसायन विज्ञान के प्रोफेसर थे। उन्होंने बीसवीं शताब्दी में दो खंड में इसे लिखा था। इसका प्रकाशन विलियम्स और नॉरगेट, लंदन द्वारा किया गया था।

भारतीय संस्कृति पर केंद्रित भारतीय विज्ञान एक महत्वपूर्ण पड़ाव पर पहुंच गया था। यह पूरा विश्व मानता है। गणित में गणना कैसे करनी है, इसे विश्व के वैज्ञानिकों ने भारतीयों से सीखा है।

देश को सशक्त बनाना जरूरी

'गुरु' शब्द का अर्थ है-अंधकार का निराकरण करने वाला। भारत को विश्व गुरु माना जाता है। ऐसे में विकसित भारत को आर्थिक रूप से सशक्त बनाना आवश्यक है। भारतीय मूल्यों के आधार पर ही भारत का विकास किया जाना चाहिए। समरस समाज,सांस्कृतिक, परंपरा, भाषाई दृष्टि से भारत का विकास होना चाहिए। इसी आधार पर हमें आगे बढ़ना चाहिए। तभी सही अर्थों में विकसित भारत निर्मित होगा। 'विकसित भारत' बनना है तो भारतीयता और भारतीय मूल्यों को केंद्र में रखकर आगे बढ़ने की आवश्यकता है। ■

"भारतीय संस्कृति की सबसे बड़ी चुनौती यह है कि हम अपनी जड़ों को समझें और उन्हें आत्मसात करें। जब तक हम अपने इतिहास और परंपराओं को सही दृष्टि से नहीं देखेंगे, तब तक हमारी पहचान अधूरी रहेगी। भारतीयता केवल अतीत नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य को दिशा देने वाली शक्ति है।"

—चंद्रप्रकाश द्विवेदी, फिल्म निर्देशक

"विश्वविद्यालयों की भूमिका अब केवल डिग्री देने तक सीमित नहीं रह गई है। उन्हें छात्रों में सांस्कृतिक समझ और सामाजिक जिम्मेदारी भी विकसित करनी होगी। इस प्रकार के आयोजन उसी दिशा में एक सार्थक प्रयास हैं।"

— प्रो. नरसी राम बिश्नोई

कुलपति, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय

किताब लेखन कार्यशाला– 'आप लिखोगे, दुनिया पढ़ेगी' सत्र में भाग लेने वाले वक्ता।

'सुनो कहानी– वंदेमातरम्' सत्र में प्रस्तुति देतीं भारती दीक्षित

रचनात्मकता का उत्सव

गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय हिसार में हुए तीन दिवसीय महोत्सव में विचार, परंपरा और रचनात्मकता का संगम देखने को मिला। इस आयोजन ने भारतीय ज्ञान परंपरा, समकालीन विमर्श और सांस्कृतिक चेतना को एक सशक्त मंच प्रदान किया

अक्षरम्-2026 साहित्य, संवाद और संस्कृति के महोत्सव का आयोजन दिनांक 3 से 5 अप्रैल 2026 तक गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार में विश्वविद्यालय तथा जिल्द संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। तीन दिनों तक चले इस आयोजन में साहित्य, संस्कृति, इतिहास, राष्ट्रीय चेतना, समकालीन विमर्श और रचनात्मक अभिव्यक्ति के विविध आयामों पर व्यापक संवाद हुआ।

महोत्सव का शुभारंभ

गत 3 अप्रैल को 'अक्षरम् स्वदेशी हाट' के उद्घाटन के साथ इसका शुभारंभ हुआ। इस हाट का उद्घाटन स्वदेशी जागरण मंच के राष्ट्रीय सहसंयोजक अश्विनी महाजन ने किया। इसी अवसर पर विभाजन विभीषिका की स्मृति, हरियाणा का इतिहास एवं संस्कृति और 'वंदे मातरम्' विषय पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन संगीतकार अनु मलिक, डॉ. कमल गुप्ता (पूर्व कैबिनेट मंत्री, हरियाणा), हितेश शंकर (संपादक, पाञ्चजन्य), मनोज कुमार (राष्ट्रीय संगठन मंत्री, अखिल भारतीय साहित्य परिषद्) और विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. नरसी राम बिश्नोई द्वारा संयुक्त रूप से किया गया। इसके उपरांत एक बौद्धिक सत्र आयोजित किया गया, जिसमें भारतीय संस्कृति, साहित्य और ज्ञान परंपरा के विविध आयामों पर विचार-विमर्श हुआ।

दूसरे दिन 4 अप्रैल की प्रातः हरियाणा के बिंद्र दनौदा द्वारा राम मंदिर, गुरु तेग बहादुर के बलिदान तथा राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शताब्दी यात्रा से संबंधित विषयों पर व्याख्यान एवं सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। इसके बाद सीएसआर ऑडिटोरियम के मुख्य सभागार में कार्यक्रम का औपचारिक उद्घाटन सत्र आयोजित किया गया। इस अवसर पर हरियाणा सरकार के लोक स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग तथा लोक निर्माण विभाग (भवन एवं सड़कें) के कैबिनेट मंत्री श्री रणबीर गंगवा मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य वक्ता के रूप में प्रज्ञा प्रवाह के राष्ट्रीय संयोजक श्री जे. नंदकुमार ने अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में हितेश शंकर (संपादक, पाञ्चजन्य), प्रो. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री (कार्यकारी उपाध्यक्ष, हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी), डॉ. अमित आर्य (कुलपति, सुपवा), प्रो. बी. आर. कम्बोज (कुलपति, हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार) तथा विश्वविद्यालय के कुलसचिव डॉ. विजय कुमार मंचासीन रहे और सभी ने वैचारिक सत्र में अपना योगदान दिया। इसके बाद विभिन्न तकनीकी एवं वैचारिक सत्रों में समकालीन विमर्श के अनेक पक्षों पर चर्चा हुई।

'वर्चुअल बनाम वास्तविक नैरेटिव' विषय पर स्तंभकार रतन शारदा, अखिलेश शर्मा, विष्णु शर्मा और वरिष्ठ पत्रकार अनुराग पुनेठा ने अपने विचार प्रस्तुत किए। समानांतर सत्र 'पुरखे और पुरुषार्थ : गुरु तेग बहादुर' पुस्तक चर्चा में प्रो. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री, संत रघुबीर सिंह बाजवा तथा प्रो. कौशलेंद्र तिवारी ने विचार व्यक्त किए। 'डेमोग्राफी परिवर्तन और देश की सुरक्षा' विषयक सत्र में अशोक सैनी (जिलाध्यक्ष, भाजपा, हांसी), रा.स्व.संघ के प्रचारक सतीश गोकुल पांडा, भारतीय नीति प्रतिष्ठान में निदेशक कुलदीप रत्नू, श्यामप्रसाद मुखर्जी शोध संस्थान के निदेशक बिनय सिंह ने अपने विचार रखे।'साहित्य और सिनेमा में लोककथा' विषयक सत्र में पद्मश्री मालिनी अवस्थी, पद्मश्री चंद्र प्रकाश द्विवेदी तथा लेखक राहुल नील ने सहभागिता करते हुए सत्र को गरिमा प्रदान की।

कार्यक्रम में सांस्कृतिक प्रस्तुति देते छात्र-छात्राएं

इसके पश्चात 'भारत विभाजन : पीड़ा और पाठ' विषय पर प्रो. कुलदीप चंद्र अग्निहोत्री, श्री राजीव तुली तथा श्री कृष्णानंद सागर ने विस्तृत परिचर्चा की। सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के अंतर्गत अदिति कॉलेज दिल्ली की डॉ. नीलम राठी की टीम द्वारा 'बंटवारे का दर्द' विषय पर नाट्य प्रस्तुति तथा भारती दीक्षित द्वारा 'सुनो कहानी- वंदे मातरम्' की प्रभावशाली प्रस्तुति दी गई। सायंकालीन भक्ति संगीत सत्र में हरियाणा भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री मोहनलाल बडौली की उपस्थिति रही, जिन्होंने सांस्कृतिक चेतना और स्वदेशी के महत्व पर अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम में दौरान भारत के संविधान पर केंद्रित नौ महत्वपूर्ण शोध-पत्रों का वाचन देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों द्वारा किया गया। कवि सम्मेलन में राष्ट्र, देशभक्ति और रामचरित पर आधारित काव्य पाठ दस कवियों एवं कवयित्रियों द्वारा प्रस्तुत किया गया। प्रसिद्ध हिंदी लेखक नीलोत्पल मृणाल ने साहित्य की लेखन विधा और समकालीन विचारधारा पर व्याख्यान दिया।

'मीडिया : सच का झूठ' विषयक सत्र में लेखक राजीव रंजन प्रसाद, फिल्म समीक्षक विष्णु शर्मा और पत्रकार रीमा गौतम ने युवाओं को मीडिया की वास्तविकताओं से अवगत कराया। 'हरियाणा का साहित्य और पत्रकारिता में योगदान' विषय पर श्री रणधीर पनिहार (विधायक, नलवा), डॉ. वीरेंद्र सिंह चौहान तथा प्रो. अमित आर्य ने अपने विचार प्रस्तुत किए। 'ए.आई. लेखन और रचनात्मकता' विषयक सत्र में श्री प्रत्यूष रंजन, श्री अनिल पांडेय तथा श्री गौरव ललित ने विद्यार्थियों के साथ संवाद किया। 'यात्रा एवं कहानी लेखन कार्यशाला' में श्री आदित्य ओम, श्री राहुल चौधरी नील, पीयूष पांडेय, प्रभांशु ओझा तथा श्री अतुल गंगवार ने लेखन की सूक्ष्मताओं से प्रतिभागियों को अवगत कराया। 'किताब लेखन कार्यशाला - आप लिखेंगे तो दुनिया पढ़ेगी' ने लेखकीय दृष्टिकोण को विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया। 'साहित्य में लैंगिक विमर्श' सत्र में श्री गोपिशंकर एम तथा डॉ. सोनाली मिश्रा ने विषय पर विस्तार से चर्चा की।

सांस्कृतिक संध्या

तीनों दिनों में सांस्कृतिक संध्याओं का भी आयोजन किया गया, जिनमें

"लोक संगीत केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि हमारी परंपरा और सांस्कृतिक स्मृति की जीवित धड़कन है। इसमें हमारी मिट्टी की खुशबू और जीवन की सादगी झलकती है। यदि हम इसे सहेज कर नहीं रखेंगे, तो हमारी आने वाली पीढ़ियां अपनी जड़ों से दूर हो जाएंगी"

-मालिनी अवस्थी, लोक गायिका

अलग-अलग बैंड प्रस्तुतियों के माध्यम से विविध सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति क्षमता को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 'कहानी कैफ़े', 'ओपन मंच' तथा 'गपकही' जैसे मंच भी स्थापित किए गए।

इस प्रकार अक्षरम्-2026 के अंतर्गत विभिन्न विधाओं पर कुल सात मंच स्थापित किए गए, जिन पर विभिन्न विधाओं से संबंधित 60 से अधिक सत्र आयोजित किए गए। इस आयोजन में विश्वविद्यालय के गुरु जम्भेश्वर जी महाराज धार्मिक अध्ययन संस्थान, मीडिया एवं जनसंचार विभाग, हिंदी विभाग, दत्तात्रेय ठेंगड़ी पीठ (अर्थशास्त्र विभाग), मनोविज्ञान विभाग, विश्वविद्यालय पुस्तकालय, विद्यार्थी कल्याण विभाग तथा सांस्कृतिक प्रस्तुतियां प्रकोष्ठ द्वारा संयुक्त रूप से सहभागिता एवं संयोजन किया गया। इस कार्यक्रम के आयोजन में ऊर्जा मंत्रालय, भारत सरकार, हरियाणा हेरिटेज एवं पर्यटन विभाग, हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी तथा दादा लखमीचंद राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय (सुपवा), रोहतक की समन्वयक सहभागिता रही।

महोत्सव के अंतिम दिन 5 अप्रैल को तीसरे दिन दर्शकों के लिए 'शतक' फिल्म का प्रदर्शन किया गया। इसके पश्चात 'जेन-जी डायलॉग' विषय पर आईपीएस अधिकारी निधिन वाल्सन और तृप्ति सिंघल सोमानी ने युवाओं से संवाद किया। 'जलवायु परिवर्तनः विनाश बनाम विकास' सत्र में प्रो. नरसी राम बिश्नोई और पत्रकार शिप्रा माथुर ने पर्यावरणीय संतुलन और सतत विकास के संदर्भ में अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का समापन सत्र हरियाणा के माननीय राज्यपाल असीम कुमार घोष के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। इस दौरान दीपक भारद्वाज की टीम द्वारा 'रानी अबक्का' की वीरता और देशभक्ति पर आधारित नाट्य प्रस्तुति हुई। इसके पश्चात श्री विनीत चौहान द्वारा प्रस्तुत 'भारत गाथा' में भारत के गौरवशाली इतिहास, राम मंदिर निर्माण, धारा 370 की समाप्ति तथा पुलवामा हमले के बाद भारत की दृढ़ राष्ट्रीय प्रतिक्रिया को प्रभावपूर्ण ढंग से चित्रित किया गया। ■

बात भारत की

पाञ्चजन्य

₹50.00

26 अप्रैल, 2026

वैशाख शुक्ल 10, वि.सं. 2083, युगाब्द 5128

विशेष साक्षात्कार

"विकसित छत्तीसगढ़ बनाना ही हमारा एक मात्र लक्ष्य" 24

#बंगाल चुनाव

जन की बात!

34 साल बाद बदलाव आया था, 15 साल बाद मोहभंग क्यों? 'कट मनी', तुष्टिकरण और घुसपैठ के सवालों के बीच क्या बंगाल फिर करवट के लिए कसमसा रहा है? जनता के मन को मथते मुद्दों की थाह लेता पाञ्चजन्य का विशेष आयोजन